जुलूस

बादल सरकार

मूल बांगला नाटक 'मिछिल' का अनुवाद

अनुवादक :

यामा, सराफ

लेखक की विशेष भूमिका के साथ

लिपि प्रकाशन

यामा सराफ
फ्लैट नं० 7, 233/5, जगदीशचंद्र बोस रोड,
कलकत्ता–700020

प्रथम संस्करण : जनवरी, 1978
प्रकाशक
लिपि प्रकाशन
ई 10/4, कृष्णनगर, दिल्ली-110051
मुद्रक : प्रगति प्रिंटर्स, दिल्ली-32
मूल्य : छह रुपये

लेखक

बादल सरकार (जन्म 1925) पेशे से सिविल इंजीनियर और नगर नियोजक, आजकल ग्राम विकास में संलग्न, रंगमंच से 1956 से सम्बद्ध हैं—पहले अभिनेता और निर्देशक के रूपमें, अब नाटककार के रूप में। छोटे-बड़े लगभग 25 नाटक लिख चुके हैं। 1967 में यात्रा शैली में अपने नाटकों के मंचन के लिए कलकत्ता में 'शताब्दी' की स्थापना की। बाद में 'अंगनमंच' के नाम से एक छोटा-सा प्रायोगिक मंच स्थापित किया। पिछले कुछ वर्षों से मुक्त-आकाश रंगमंच का प्रयोग कर रहे हैं। संगीत-नाटक अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित। भारत के अन्यतम नाटककार के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त।

अनुवादक

यामा सराफ (जन्म अक्टूबर 1949) शिक्षा-बी० ए०, कलकत्ता की 'अनामिका' संस्था से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हैं। अब तक अनेक नाटकों में अभिनय कर चुकी हैं। बादल सरकार के 'सोल्यूशन एक्स' और 'बीज' नाटक का अनुवाद कर चुकी हैं। अन्य कई अनुवाद भी किये हैं। 'जुलूस' पहला प्रकाशित अनुवाद है।

कुल पात्र : आठ पुरुष, एक स्त्री, एक बालक

बांगला में 'जुलूस' का प्रथम मंचन बादल सरकार के निर्देशन में सन् 1974 में कलकत्ता मे, मराठी में प्रथम मंचन अमोल पालेकर के निर्देशन मे बम्बई मे सन् 1976 में, तथा हिन्दी में प्रथम मंचन एम० के० रैना के निर्देशन में दिल्ली में सन् 1977 मे हुआ।

बाद में एम० के० रैना के निर्देशन मे दिल्ली की सड़कों, चौराहों और पार्कों मे 'जुलूस' के अनेक मंचन हुए, जिनमे तुर्कमान गेट, कनाट प्लेस सेंट्रल पार्क, मडी हाउस का चौराहा, कस्तूरबा मार्ग, बोट क्लब इंडिया गेट, सीमापुरी, लोदी कालोनी, पश्चिमी पटेल नगर, नेहरू प्लेस आदि स्थानों पर हुए मंचन विशेष रूप से सराहे गये।

आवरण पृष्ठ के फोटो चित्र एम० के० रैना के निर्देशन में 'प्रयोग' नाट्य संस्था के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत प्रथम हिन्दी मंचन के हैं।

भूमिका

प्रस्तुत नाटक की रचना 'अंगनमंच' को दृष्टि में रखकर की गई थी। हमारे नाटकदल 'शताब्दी' द्वारा एक विशेष प्रकार के थियेटर को यह नाम दिया गया है। इस थियेटर में एक खाली कमरे में जमीन पर नाटक खेला जाता है और दर्शकों को इस तरह बैठाया जाता है कि उनके और अभिनेताओं के बीच करीब-करीब कोई रुकावट या दूरी नहीं रहती। विभिन्न नाटकों एवं उनकी प्रस्तुतियों की आवश्यकता के अनुरूप अभिनय स्थल एवं दर्शकों के बैठने की जगह में परिवर्तन होता रहता है।

बांगला में 'जुलूस' (मिछिल) का मंचन सन् 1974 में हुआ था, मैंने ही निर्देशन किया था। इसकी प्रस्तुति के समय हम लोगों ने बैठने की सीटों को ऐसे रखा था जिससे बहुत सारे रास्ते बन जाएं। इन रास्तों पर अभिनय होता था, दोनों ओर दर्शक बैठते थे और उनके बीच से मानो सड़क पर जुलूस निकलता रहता था। निर्देशन में मैंने इस बात का विशेष ख्याल रखा था कि अभिनेता बराबर एक जगह से दूसरी जगह जाते रहें।

बाद में इसे हम लोगो ने खुले मे किया—सार्वजनिक पार्क, लॉन या गांवों में। तब दर्शक चारों ओर बैठते थे, बीच में अभिनय होता था। अभिनेता यथासंभव टढ़े-मेढ़े रास्तों पर चलने का अभिनय करते थे, बराबर मुड़-मुड़कर चलते थे।

मैंने इस नाटक को साधारण चौखटा मंच के लिए नही लिखा था और मुझे लगता है कि उस पर खेलने से इसका बहुत-सा सौंदर्य नष्ट हो जाएगा।

विभिन्न स्थलों पर केवल 'शताब्दी' ही अब तक इसके करीब 90 प्रदर्शन कर चुकी है। अन्य संस्थाओं द्वारा भी इसके अनेक प्रदर्शन हो चुके हैं और बराबर हो रहे हैं।

बादल सरकार

यह नाटक

बादल सरकार का नाम नाट्यजगत् में सुपरिचित है। पिछले दस वर्षों में संभवतः बादल बाबू के सर्वाधिक नाटकों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद और मंचन हुआ है। 'एवम् इं जित,' 'बाकी इतिहास,' 'सारी रात' और 'अंत नहीं' जैसे गंभीर नाटक, 'राम-श्याम-जदु,' 'बल्लभपुर की रूपकथा,' 'कवि कहानी' और 'यदि एक बार फिर से' जैसे हास्य नाटक का लेखक पिछले कई वर्षों से नाट्य लेखन की एक नई दिशा पकड़कर चल रहा है।

इस नये दौर के नाटक प्रस्तुति की विशेष शैली को दृष्टि में रखकर लिखे गए हैं। दूसरों के द्वारा अपने अनेक नाटकों का मूल बांगला में मंचन न होने के कारण क्षुब्ध होकर नाट्यकार निर्देशक बनने को प्रवृत्त हुआ, उसमें उसे रस आने लगा, लिखित नाटक को एक और नया रूप देने की प्रवृत्ति सुखकर होती गई। धीरे-धीरे निर्देशक नाट्यकार पर हावी होता गया, प्रस्तुति की विशेष शैली नाट्यकार की दिशा निश्चित करने लगी। बादल बाबू नियमित चौखटा मंच त्यागकर 'अंगनमंच' की ओर उन्मुख हुए। दर्शकों के निकट आकर अभिनय करने से प्राप्त सुख की लालसा तीव्र होती गई और आज वे केवल अंगनमंच में नाटक प्रस्तुत कर रहे हैं, उसे ही दृष्टि में रखकर नाटक लिख रहे हैं। 'जुलूस' उनकी ऐसी ही एक कृति है।

यद्यपि बादल बाबू ने अपने कई पुराने नाटकों को भी अंगनमंच में प्रस्तुत किया तथापि 'स्पार्टकस' को उसी के लिए विशेष रूप से लिखा। 'जुलूस', 'भोमा', 'सुपाठ्य भारतेर इतिहास' और 'भांगा मानुष' उसी की अगली कड़ियां है। एक बड़े कमरे में चारों ओर बैठे दर्शक, अगल-बगल या बीच में बैठे दर्शक, और उनके बीच घूम-घूमकर अभिनय करते कलाकार—न कोई मंचसज्जा न विशेष रूपसज्जा और न ही आलोक व्यवस्था किंतु अपने कथ्य की मार्मिकता और गहनता तथा शैली की अंतरंगता के

कारण प्रस्तुति बांधे रखती है, दर्शक खाली मन नहीं लौटता।

'जुलूस' आज के युग की स्थिति के ऊपर एक तीखा व्यंग्य है, करारा प्रहार है। हर तरह के जुलूस हैं जिनमें व्यक्ति खोया हुआ है। सत्ताधारी या उनके समर्थक नाना प्रकार के जुलूसों, नारों और प्रचारों में लगे हैं और साधारण मानव, कल जिसे देश की बागडोर संभालनी है वह बालक मर रहा है, उसका खून हो रहा है। लोग अनुभव करते हैं कि किसी का खून हो रहा है पर पूरी तरह बात समझ नहीं पाते, समझकर भी कुछ कर नहीं पाते। और यह स्थिति नई नहीं है, दीर्घकाल से चली आ रही है। अंत में सही रास्ता दिखलानेवाले, घर तक पहुंचाने वाले जुलूस का प्रादुर्भाव होता है, व्यक्ति आश्वस्त हो उसके पीछे चल राहत की सास लेता है।

नाट्य रचना प्रस्तुति के विशेष स्वरूप को दृष्टि में रखकर की गई है और उसी रूप में वह विशेष प्रभावशाली हो सकती है। जुलूस का अंग बनकर ही हम उसके खोखलेपन को समझ सकते हैं, जुलूस निकालनेवालों से त्रस्त जनता की पीडा का अनुभव कर सकते हैं। मूक अभिनय द्वारा अनेक स्थलों को प्राणवान बनाना होगा, अनेक चित्र खड़े करने होंगे तभी नाटक का कथ्य स्पष्ट हो पाएगा। नाट्यकार ने नाटक में बहुत कुछ कहा है किंतु अनकहा भी कम नहीं है, वह निर्भर करेगा निर्देशक की कल्पनाशीलता पर। सुसम्बद्ध कथानक के अभाव में भी नाटक में एक लय है, उसकी पकड़ निर्देशक के लिए आवश्यक है, तभी नाटक गतिशील बन पाएगा, उसका कथ्य एक साथ समन्वित होकर सार्थक होगा।

प्रतिभा अग्रवाल

'जुलूस' के निर्देशन के बारे में

खुली धूप में किये जाने वाले थियेटर' की तरफ वापिस जाने का ख्याल इधर एक अरसे से मुझे परेशान करता रहा है। वैसे भी सदियों पहले नाटक दिन की रोशनी या फिर रात को एक अलाव के आसपास ही खेले जाते थे। इन नाटकों के दर्शक उसी जगह के लोग होते थे जहां कि इन्हें खेला जाता था। बल्कि शायद यह कहना ज्यादा सही होगा कि उस प्रदर्शन कर्म के अन्तर्गत होने वाले रूपान्तर की सारी प्रक्रिया ही उस समाज का सरोकार होती थी। सार्थक होने के साथ ही साथ नाट्यकर्म उन लोगों मे एक आस्था और श्रद्धा पैदा करता था और उससे वे निश्चित रूप से सम्बद्ध होते थे।

क्या आज ऐसा नही हो सकता ? उसके लिए किस प्रकार के थियेटर (फॉर्म और कन्टेन्ट दोनों ही के दृष्टिकोण से) की जरूरत है ? क्या आज का समाज अपने विकास और उन्नति की पूरी प्रक्रिया से सक्रिय रूप में सम्बद्ध हो सकता है ? इस संदर्भ मे नाटक या थियेटर किस प्रकार का प्रभाव पैदा कर सकता है ? इन सवालों का जवाब ढूंढ़ने के लिए उन सारे तौर-तरीकों की खोज जरूरी थी जो आज सार्थक और अर्थपूर्ण हो सकते हैं।

पता नही क्यों लेकिन आजकल शहरो में काम करने वाली ज्यादातर नाट्य संस्थाओं में एक अजीब प्रवृत्ति पैदा होती जा रही है—अपने प्रदर्शनों को कृत्रिमता के दायरों में सीमित करने की, अर्थात् जहां कि कलाकारों को फ्लड् लाइट्स, मेक-अप, मंच सज्जा आदि बनावटी सुरक्षाएं उपलब्ध रहती है। इसका परिणाम यह होता है कि प्रदर्शनकर्ता के ऊपर एक बहुत ही गैर-जरूरी तनाव हावी हो जाता है।

इसी प्रकार के बहुत सारे सवाल जिनके कि कोई बहुत संतोषजनक उत्तर मुझे नही मिल पाते, मेरे भीतर गहरे समाये रहे हैं।

रंगकर्म सम्बन्धी मेरी गतिविधियां और कार्यकलाप कुछ इस प्रकार के रहे हैं कि मैं देश भर में जगह-जगह घूमता रहा हूं और हर बार जब मैं किसी नई जगह पर गया हूं तो बहुत-सी नई बातें मेरे सामने आई हैं। लगभग तीन-चार वर्ष तक इसी प्रकार काम करने के बाद मैंने इस बार फिर यह निश्चय किया कि 'केवल मानव-उपकरण' के माध्यम से ही काम किया जाए। इसलिए फिर 'जुलूस' की तरफ ध्यान गया और उसको किसी खाली विस्तार में प्रदर्शित करने की बात मन मे आई—बिना किसी मंच अथवा रूप सज्जा के और बिना वेशभूषाओं व अन्य मंच उपकरणों के। ऐसे किसी भी व्यक्ति का जो इस प्रस्तुति में शामिल होना चाहता था या इसके प्रति जिसके मन मे किसी भी प्रकार की उत्सुकता थी उसका स्वागत था।

अन्ततः ऐसे नौजवानों का एक अच्छा खासा समूह तैयार हुआ जिनमे अभिनय की प्रवीणता भले ही उतनी नही थी लेकिन सामाजिक परिवेश के प्रति ये सब नौजवान बहुत जागरूक थे। नाटक की तैयारी के दौरान बहुत से लोग चले भी गए क्योंकि शायद वे इसे एक बड़ी सामाजिक जिम्मेदारी की तरह महसूस कर सकने में असमर्थ थे। पहली बार सब लोगो के सामने नाटक पढ़ा गया तो अभिनेताओं द्वारा आम आदमी के संदर्भ मे नाटक की सम्प्रेषणीयता को लेकर बहुत सारे सवाल पूछे गए। लेकिन साथ ही सभी की ओर से नाटक को खेलने का एक गम्भीर आग्रह भी था और उसकी सम्प्रेषणीयता को बढ़ाने की कोशिश के प्रति भी उत्साह था। दिल्ली मे हुई कुछ विगत घटनाओं के आधार पर नाटक में कुछ परिवर्तन करने की जरूरत भी महसूस हुई क्योंकि नाटक लिखते समय बादल सरकार की कल्पनाएं कलकत्ता और वहां के जन-जीवन पर आधारित थीं। इस सिलसिले में जब मैंने बादल दा से बात की तो वे इन परिवर्तनों के लिए तैयार भी हो गए।

चूंकि यह नाटक अ-राजनीतिक है इसलिए यह उन सारी दमनकारी शक्तियों पर तीखा प्रहार करता है जिनकी गिरफ्त में आम आदमी की रोती और गिड़गिड़ाती हुई जरूरतमंद आवाज़ क़ैद है। ये दमनकारी शक्तियां हमें भीतर और बाहर दोनों तरफ से घेरे हुए हैं।

हम उन्हें केवल झटक कर उनसे अपनी जिम्मेदारी नहीं छुड़ा सकते।

हम अपने आप को धोखा देते हैं और फिर पछतावा महसूस करते हैं और इस प्रकार एक पाप-बोध हमारे भीतर पैदा हो जाता है। इसी स्थिति को 'जूलूस' हमारे सामने बिल्कुल साफ और सीधे ढंग से रखता है और एक प्रहार-सा करता है। जुलूस के जरिये हमारा दिन प्रति दिन होता दमन और हमारी क्रूर व्यवस्था का वह सारा दमनकारी कर्मकाण्ड, और आदमी के प्रति उसकी क्रूर उदासीनता, अपने पूरे नंगेपन के साथ हमारे सामने आता है।

हम हर रोज जुलूस देखते हैं। लगभग सारे ही समय हम स्वयं किसी किसी न किसी जुलूस में शामिल रहते है। कितने ही जुलूस हमारे चारों तरफ से चलते, दौड़ते, उड़ते, गाजे-बाजे के साथ गाते-चिल्लाते हुए गुजरते रहते हैं। वे सब हमारे भीतर तक घुस जाते हैं या फिर हम उन्हे दूसरों के भीतर घुसा देते हैं।

यह सहज ही संभव है कि इन सारे जुलूसों का जन्म पूरी सच्चाई और ईमानदारी के साथ होता है। लेकिन फिर उन्हें क्या हो जाता है ? क्या उन्हे देर हो जाती है ? वे कहां से शुरू हुए थे ? उन्हें कहां जाना था ? वे कहां पहुचे ? उनका अन्त या समापन कहां जाकर हुआ ?

इस तरह तमाम सवाल हमारे चारों तरफ जुलूसों की शक्ल में बिखरते जा रहे हैं। और इनका अन्तिम परिणाम एक ऐसा दिशाहीन शोर होगा जिसमें हमारी रोजमर्रा की घुटन, यातना और अन्ततः मौत भी खोकर रह जाएगी। उस नैराश्य और दु.ख की कोई प्रतिध्वनि कही नहीं होगी। लेकिन यही दुख जैसे किसी चीज से टकरा कर हमारे पास वापिस पहुचता है—एक जुलूस की शक्ल में, और बहुत से और जुलूस उसके साथ होते हैं—उसके विरोध में या उसका साथ देते हुए, या उसका पीछा करते हुए।

कभी-कभी सारा इतिहास ही जुलूसों की एक के बाद एक उमड़ती हुई लहरों-सा लगता है। इन जुलूसो की एक अपनी भाषा बन जाती है और उसी भाषा का फिर बार-बार इतना घिसा-पिटा उपयोग होता है कि उसका अर्थ ही खत्म हो जाता है। बचते हैं सिर्फ खोखले नारे, कठोर अधिशासनिक प्रवृत्तिया और एक मनुष्यत्त्वविहीन सत्ता। यह सत्ता कोई सवाल नही चाहती। इस सत्ता के पास यह अधिकार होता है कि आपके

सारे नाड़ीतन्त्र जिसमें कि सवाल पूछने की क्षमता होती है, उसे बिल्कुल बन्द कर दे। क्यों और कैसे जैसे शब्दों का अस्तित्व खत्म हो जाता है। हर व्यक्ति को हुक्म बजा लाना पड़ता है। सच्चाई और वास्तविकता खो जाती है। परिणाम अस्तव्यस्तता और दुर्व्यवस्था होता है, और अन्तिम परिणाम होता है मौत।

इन्हीं सब विचारों के साथ हमने यह काम अपने हाथ में लिया था। जहां-जहां भी संभव होता है हम इस नाटक को ले जाते हैं। 1 जून 1977 को तुर्कमान गेट दिल्ली पर इसकी प्रस्तुति के माध्यम से हमने उस मोहल्ले में हुई एक सत्तावादी त्रासदी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी। वहां के लोग क्योंकि अभिजात्य वर्ग के बन्द नाट्यगृहों में कभी नहीं आ पाते इसलिए हम लोगों ने इस 'जुलूस' के साथ उन तक पहुंचने की कोशिश की। यह हम जानते हैं कि हम हर आंख से आंसू नहीं पोंछ सकते। लेकिन इन आंसुओं में हम एक आशा तो देख ही सकते हैं। हमारे लिए 'जुलूस' के प्रदर्शन की यह योजना हर प्रकार से एक शिक्षा थी। इसके पहले मैंने कभी भी अभिनेताओं को इतना सजीव और प्रसन्न नहीं देखा था—न ही उन्हें लोगों से हर बात के बारे में इतना खुलकर बात करते देखा था। और जिस ज़िम्मेदारी के साथ हम सब लोगों ने दिल्ली की पुलिस के साथ, जो कि इन प्रदर्शनों को रोकने की कोशिश में थी, संघर्ष किया, वह भी एक विशिष्ट अनुभव था। वास्तव में पुलिस वालों का अतिक्रमण इसके प्रदर्शन का हिस्सा बन जाता था। हमारे दर्शकों ने पुलिस के साथ हमारी इस लड़ाई में हमारा बहुत साथ दिया और यही इस नाटक की सम्प्रेषणीयता का सबसे बड़ा प्रमाण है। इसके अलावा कई और सूझ-बूझ से भरी बातें भी प्रदर्शन के दौरान सुनने को मिलती थीं। मैं सचमुच उन दर्शकों का हृदय से आभारी हूं जिन्होंने एक गिलास पानी या एक कप चाय और या सिर्फ किसी अनुभवी सीख के साथ हमारा उत्साह बढ़ाया। एक नाट्य दल के रूप में भी ('प्रयोग') हम लोग इन प्रदर्शनों के कारण खासे वयस्क और परिपक्व हुए हैं और इस बात के लिए मैं बादल दा का अत्यंत आभारी हूं—आखिरकार तो यह उन्हीं की कल्पना-संतान है जिसे 'प्रयोग' ने गोद लिया है।

एम० के० रैना

जुलूस

हिन्दी में 'जुलूस' की सबसे पहली प्रस्तुति 'प्रयोग' नाट्य संस्था, नई दिल्ली, द्वारा 1 जून, 1977, को तुर्कमान गेट के बाहर खुले मैदान में हुई

कलाकार

बूढा : विवेक
मुन्ना (बच्चा) : हबीब
कोतवाल : आदिल राना
गुरुदेव : वेद प्रकाश
एक : वीरेन्द्र सक्सेना
दो : महिन्द्र कौशल
तीन : नवतेज
चार : जलीस
पांच : अनीस
छह : ओम गोसाईं
निर्देशक : एम० के० रैना

जुलूस

[प्रेक्षागृह और रंगमंच एक ही है। बैठने की सीटें यहां-वहां रख दी गई हैं। उनके बीच से गोरखधंधे की तरह का चक्कर खाता हुआ रास्ता। रास्ते के दोनों ओर दर्शकों के बैठने का स्थान। दर्शकों को दरवाजे से भीतर लाया जा रहा है, रास्ते पर घुमाकर उन्हें छोड़ दिया जाता है— दर्शकों की जहां इच्छा हो वहां बैठें।

नाटक के आरंभ होने की घंटी बजती है। कोरस, जिसमें पांच लड़के (एक से पांच) एवं एक लड़की (छह) हैं, साधारण दर्शकों की भांति आकर कमरे में तितर-बितर हो जाते है, मानो बैठने की जगह खोज रहे हों। अचानक सब बत्तियां बुझ जाती हैं।]

एक : क्या हुआ ? बत्तियां क्यों बुझ गई ?

दो : फ्यूज ही गया क्या ?

तीन : 'लोड शेडिंग' यह जो शुरू हुई है न आजकल। हर रोज—

चार : अरे नहीं, सेबोटेज—गुंडई है। किसी ने तार काट दिया है—

पांच : सावधान ! छीना-झपटी करने वालों को ऐसे में ही तो मौका मिलता है—

छह : ओहो! कुछ भी नहीं दिख रहा है। क्या होगा ?

एक : अरे साहब, जरा देखकर चलिए न ! सिर पर चढ़े चले आ रहे है।

दो : इस अंधेरे में देखूं कैसे ? उल्लू हूं क्या ?

तीन : आहहा ! आगे बढ़िए, आगे बढ़िए, आगे बढ़िए। खड़े मत रहिए—

चार : धत्तेरे की ! इस अंधेरे में किस गड्ढे में जाकर गिरूंगा, कौन जाने—

पांच : पाकेट सम्हालिए। पाकेट सम्हालिए। ऐसे ही में तो—

छह : कुछ दिखाई नहीं दे रहा है, यह हुआ क्या ?

[अचानक एक गगनभेदी आर्त्तनाद—लगता है कि किसी स्त्री का खून हुआ हो।]

एक : क्या हुआ ? क्या हुआ ?

दो : कौन चिल्लाया इस तरह ?

तीन : खून ! खून हुआ है किसी का !

चार : नहीं, नहीं, कोई गड्ढे में गिर गया है।
पांच : छुरी मारी है, छुरी ! होशियार !
छह : (क्रंदन) रोशनी ! रोशनी जलाओ ! रोशनी जलाओ—
एक : टार्च नहीं है किसी के पास, टार्च ?
दो : शहर के अंदर कौन टार्च लेकर चलता है !
तीन : दियासलाई ? लाइटर ?
चार : अरे बाबा, जो हो पास में सो जलाइए न।
पांच : बीड़ी सिगरेट तो सब लोग पीते हैं, दियासलाई नही है किसी के पास ?
छह : (रोती है) कौनसे जहन्नुम में जाने के लिए आज घर से बाहर पैर निकाला था।

[एक-एक करके दियासलाई, लाइटर जलते हैं। कुछ देर तक चारों तरफ घूम-घूमकर खोज होती है]

एक : ऐं, कही भी तो कोई-नहीं है।
दो : कोई नहीं है तो फिर चिल्लाया कौन था ?
तीन : खून हुआ है। जरूर ही…
चार : नही, नहीं, कोई गड्ढे में गिरा है। सारा रास्ता खोद-खोदकर—
पांच : छुरी मारकर लाश हटा दी है—
छह : मैं घर जाऊंगी। घर जाऊंगी।

[अचानक कोतवाल की हुंकार सुनाई

देती है]

कोतवाल : एई। यहा क्या गोलमाल हो रहा है ?

एक : वत्ती गुल हो गई है—अंधेरा टुप।

दो : जैसे कोई चिल्लाया। भयानक चीख—

तीन : खून हुआ है—खून ही हुआ है—

चार : नहीं, नहीं वच गया है, गड्ढे में गिरा है—

पांच : छुरी मारी है—लाश उठाकर ले गया है—

छह : पुलिस—पुलिस !

कोतवाल : (हुंकार) ठहरो !

[सव ठहर जाते हैं। वत्ती जलती है। सब लोग आंखों पर हाथ रख लेते हैं। कोतवाल दरवाजे के पास जाकर खड़ा होता है ?]

कहां किसका खून हुआ है ?

एक : पर हम लोगो ने—

दो : अपने कानों से—

तीन : खून—

चार : गड्ढे में गिरा है—

पांच : छुरी मारी है—

छह : यह क्या झमेला—

(एक साथ)

कोतवाल : (डपटकर) फालतू की वात—विलकुल झूठी अफवाह—चलो जाओ, सव लोग घर जाओ !

[सव चुप। हठात् दर्शकों के बीच बैठा

एक अल्पवयसी लड़का मुन्ना लुढ़ककर गिर पड़ता है। सब उसकी ओर दौड़ते हैं]

एक : यही तो है, यही तो है—
दो : तब ? नहीं तो वह चीख—
तीन : कहा था खून हुआ है—
चार : गड्ढे में गिरकर मरा है—
पांच : यह रही लाश—
छह : हाय मैया—
(एक साथ)

कोतवाल : (ज़ोर से डपटकर) चो...प

[सब चुप हो जाते हैं। कोतवाल मारने को प्रस्तुत होने वाली मुद्रा में उन लोगों की ओर बढ़ता है। वे लोग एक एक कदम पीछे की ओर खिसकते हैं]

: किसी का खून नहीं हुआ है। जाओ, घर जाओ।

कोरस : पर –

कोतवाल : (गला फाड़कर) कह रहा हूं घर जाओ।

[गुस्से से आगे बढ़ता है। सब खिसक जाते हैं। कोतवाल घूम-घूमकर पहरा देने लगता है। मुन्ना उठकर बैठता है]

मुन्ना : मेरा खून हुआ है। मेरा। यहां—यहां पर। मेरा खून हुआ है। (उठकर खड़ा होता है। स्वर ऊंचा होता जाता है) मैं ! मैं यह रहा मैं ! मुझे मार डाला है।

मैं मर गया हूं। अभी। अभी मेरा खून हुआ है।
आज मेरा खून हुआ है। कल मेरा खून हुआ था।
परसों, तरसों, पिछले सप्ताह मेरा खून हुआ था।
पिछले महीने। पिछले साल। रोज़ मेरा खून
होता है—हर रोज खून, हर रोज मृत्यु, हर रोज़।
कल मेरा खून होगा। परसों, तरसों, अगले सप्ताह
अगले महीने, अगले साल। मृत्यु हर रोज़ —
मेरी, मेरी।

[कोतवाल मुन्ना को देखता नहीं है।
घूम-घूमकर पहरा देता रहता है। मुन्ना
उसके आगे-पीछे घूमता हुआ बोल रहा
है। बाद में दर्शकों से भी कहता है।
अंत तक आते-आते उसके गले की आवाज़
चीत्कार में परिणत हो जाती है]

तुम्हें दिखाई क्यों नहीं पड़ता ? तुम्हें सुनाई क्यों
नहीं पड़ता ? मैं-मैं-मैं यहां हूं—मेरा खून हुआ है।
मैं मर गया हूं—रोज़ मेरा खून होता है—रोज़
हर रोज़ —हर रोज़ मृत्यु—

[फिर एक भीषण चीत्कार के साथ मुन्ना
गिर पड़ता है। कोतवाल बिना देखे,
टहलते हुए मुन्ना को ऊपर से लांघ कर
चला जाता है। कोरस, कीर्तन के दल के
रूप में खोल, करताल लेकर घुसता है।

कोतवाल दूसरी ओर से बाहर निकल जाता है]

कोरस : (गाना)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहां जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है
जो जागत है सो पावत है।

[वे मुन्ना के पास पहुंचते हैं। गाना गाते-गाते ही उसकी कड़ी पड़ गई देह को कंधों पर उठा लेते हैं। गाना क्रमशः 'राम नाम सत्य है' की ध्वनि में परिवर्तित होता है]

कोरस : राम नाम सत्य है।

[मुन्ना का शरीर उठाए वे बाहर निकल जाते है। विदूषक का-सा चोंगा और टोपी पहने एक वृद्ध, उछलकर कमरे में घुसता है]

वृद्ध : स र र र र र र र र र र र र र र या…हू…ऊ ऊ ऊ ऊ।

जुलूस जुलूस।

शवयात्रा, शोभा-यात्रा, पदयात्रा, शुभयात्रा, अयात्रा, कुयात्रा, तरह तरह का जुलूस। आइए-आइए, जुलूस चला जा रहा है। जिनको देरी हो गई हो झटपट आ जाएं। बैठ जाइए। रास्ते के दोनों

ओर अपनी सुविधानुसार जगह खोजकर बैठ जाइए। आइए, चले आइए झटपट। जुलूस-जुलूस।

[‘झटपट-चले आइए’ कहने के बाद देरी से आए दर्शकों को भीतर लाया जाता है। कोरस, उन लोगों को बैठने में मदद करता है। इसके बाद किसी दर्शक को भीतर नहीं घुसने दिया जाएगा]

: जुलूस-जुलूस। खाने-कपड़े का जुलूस, परमार्थी जुलूस, विप्लवी जुलूस, मिलिटरी जुलूस, शरणार्थियों का जुलूस, बाढ़ पीड़ितों की सहायता का जुलूस, शोक जुलूस, प्रतिवाद जुलूस, उत्सव का जुलूस, सिने गुरु का जुलूस।

[दर्शकों के भीतर घुस आने के बाद कोरस गाना गाना शुरू करता है। दो व्यक्ति वृद्ध का चोगा और टोपी खोल लेते हैं। जुलूस बनकर गाते गाते वे आगे बढ़ते हैं।]

कोरस : (गाना)

जुलूस जुलूस जुलूस, जुलूस जुलूस जुलूस।
जुलूस जुलूस जुलूस, जुलूस जुलूस जुलूस॥

[गाते गाते कोरस बाहर निकल जाता है। वृद्ध दरवाजे के पास रहता है]

ृद्ध : मैं जब छोटा था, बहुत-बहुत छोटा, तब एक दिन —एक दिन सुबह—उतरते हेमन्त और चढ़ती शीत ऋतु में हल्की-हल्की ठंडक और मीठी-मीठी धूप की मिली-जुली एक सुहानी सुबह। मैं बाबूजी का हाथ पकड़े रास्ते पर चल रहा था। पैरों के नीचे सूखे पत्तों को रौंदते हुए चर्रर-चर्रर की आवाज़ करते हुए हम कच्चे रास्ते पर चले जा रहे थे। रास्ता चक्कर खाता हुआ जा रहा था। पैरों के नीचे पीछे की ओर खिसकता जा रहा था। और सामने एक के बाद एक नए-नए रास्ते आ रहे थे। (वृद्ध चलना शुरू करता है।) थोड़ी दूर जाकर सभी रास्ते एक मोड़ घूमकर अदृश्य हो जाते हैं—मोड़ पर पहुंचने पर एक नया रास्ता··· फिर नया मोड़, फिर रास्ता अदृश्य, फिर नया रास्ता···मोड़, रास्ता अदृश्य, रास्ता, नया रास्ता —रास्ता—रास्ता (रुकता है) फिर बाबूजी ने कहा, बेटा चलो लौट चलें। मैंने कहा—थोड़ी दूर और, उस मोड़ तक। उस मोड़ के बाद क्या है, देखूंगा (चलना शुरू करता है) बाबूजी ने कहा—लौट चलें, मोड़ घूमकर नया रास्ता, होगा और क्या। मैंने कहा—थोड़ा और। उस मोड़ के बाद क्या है, मोड़ घूमकर नया रास्ता, लौट चलें, थोड़ा और, उस मोड़ तक—

[कोरस का प्रवेश—अलग-अलग कोनों पर लोग खड़े होते हैं। बुड्ढा तेज चलने लगता है, मानो दौड़ रहा हो।]

एक : मुन्ना, चलो लौट चलें—लौट चलें

दो : लौट चलें···लौट चलें···लौट चलें

तीन : चलें चलें चलें चलें

चार : लौट लौट लौट लौट

पांच : मुन्ना मुन्ना मुन्ना मुन्ना

वृद्ध : थोड़ा और, उस मोड़ तक—तनिक और उस मोड़ तक···

[बुड्ढा बाहर चला जाता है]

कोरस : (चिल्लाकर) मुन्ना! (पागलों-सी चीत्कार) मुन्ना! (आर्तनाद के स्वर में) मुन्ना!

[कुछ क्षणों के लिए शांति। फिर कोरस चलना शुरू करता है]

एक : आप लोगों में से किसी ने मुन्ना को देखा है?

दो : चपटी नाक, बड़ी-बड़ी आंखें, हलके बाल।

तीन : कम उम्र, कम अक्ल, कम समझ।

चार : तनिक नाटा, तनिक गोल, तनिक दुबला।

पांच : थोड़ा सरल, थोड़ा चपल, थोड़ा पागल।

छह : आप लोगों में से किसी ने मुन्ना को देखा है?

एक : लापता। लापता। नाम मुन्ना, उम्र कम, नाक चपटी, बदन दुबला, दिमाग थोड़ा विकृत। जिन

किन्हीं सज्जन को भी मिले, कृपापूर्वक पास के अखवार के कार्यालय में खबर दें।

दो : लापता। खून। गायव। मुन्ना नाम का वालक। राजनीतिक विचार अज्ञात। जीवित या मृत किसी भी रूप में पकड़ने पर या पता लगने पर पास के पुलिस थाने में या सेंट्रल मिसिंग स्क्वाड में खबर दें।

तीन : हैलो कस्टम्स। हैलो वार्डर सिक्यूरिटी। हैलो इन्टर पोल। मुन्ना लॉस्ट। मुन्ना एट लार्ज। एलर्ट एव्रीवॉडी।

छह : आकाशवाणी कलकत्ता। आकाशवाणी दिल्ली। आकाशवाणी वम्बई, मद्रास, कानपुर, बंगलौर, गौहाटी, इम्फाल। हमें मुन्ना का पता लगाना है। टुग, टांग।

चार : एस ओ एस। एस ओ एस। एम वी मारुति, एस एस लिवर्टी, एम वी फूजियामा, एस एस ड्रैक्यूला, एम वी जलराज, जलदूत, जलकेलि, जलचर, जलजन्तु, जलयान, जलपान—

पांच : हैलो, हैलो, स्पुटनिक ट्वेन्टी टू। ल्यूनर थर्टी थ्री। अपोलो फोर्टी फोर। उर्वशी फिफ्टी फाइव।···

एक : मुन्ना, तुम जहां भी हो, वापिस आ जाओ।

दो : तुम्हारे मां-वावूजी रोज रात को रोते-रोते सोते हैं।

तीन : तुम्हारे भाई-वहन रोते-रोते खेलते हैं। खेलते-खेलते रोते हैं।

चार : तुम्हारी मौसी, नानी, तुम्हारे चाचा, ताऊ रोते-रोते खाते है, खाते-खाते रोते है।

पांच : मुन्ना वापिस आ जाओ। तुम जो चाहोगे वह मिलेगा।

छह : वैट, बॉल, विस्कुट, चॉकलेट—

एक : किताव, कॉपी, स्कूल, कॉलेज—

दो : पास, फेल, नौकरी, रोजगार—

तीन : जमीन, जायदाद, धन, दौलत—

चार : गाड़ी, मोटर, सोना, चांदी—

पांच : सुख, शांति, धर्म, मोक्ष—

छह : वहू, वच्चे, नाती, पोते—

कोरस : सव मिलेगा, लौट आओ। सव मिलेगा, लौट आओ।

(गाना) लौट के आओ, लौट के आओ, लौट के आओ अपने घर में।

गली-गली तुम व्यर्थ भटकते, रोते रहते हैं सब घर में। *लौट के आओ—*

[गाते-गाते वाहर चले जाते हैं। वृद्ध का प्रवेश]

वृद्ध : मां-वाप ने नाम रखा था मुन्ना। हज़ारों मां-बाप के हजारों मुन्ना। मुन्ना माने छोटा। जो वड़ा

नहीं हुआ, वह मुन्ना। मुन्ना का मतलव है अपरिणत, अर्वाचीन अपरिपक्व।

कोरस : (नेपथ्य से) मुन्ना लौट आओ।

वृद्ध : मुन्ना खो गया है।

कोरस : (नेपथ्य से) मुन्ना लौट आओ।

वृद्ध : मुन्ना नहीं लौटकर आएगा। उस घर में अब फिर नहीं लौटकर आएगा।

कोरस : मुन्ना लौट आओ। घर लौट आओ।

वृद्ध : उस घर में नहीं। अब लौटेगा भी, तो किसी दूसरे घर में। सचमुच के घर में। सचमुच के सच्चे घर में।

कोरस ! (नेपथ्य में दूर से) मुन्ना लौट आओ, लौट आओ, लौट आओ।

वृद्ध : पर रास्ता कहां है ? घूम-फिर कर एक ही रास्ता है। मोड़ घूम कर फिर एक ही रास्ता। जुलूस कहां है ? रास्ता दिखलाने वाला जुलूस ? सचमुच का सच्चा जुलूस ?

[नेपथ्य में एक भयानक चीख]

यह क्या ? कौन ? मर गया ? खून हुआ ? या खो गया ? कहां ? इस मोड़ पर ? मोड़ घूमकर फिर मोड़ ? फिर मोड़ ?

[वृद्ध मोड़ घूम-घूमकर वाहर चला जाता है। एक का दौड़ते हुए प्रवेश]

एक : पेपर, पेपर। आनन्द बाज़ार, अमृत बाज़ार, युगान्तर, स्टेट्समैन, टाइम्स, हिन्दू—पेपर, पेपर—

[कोरस के दूसरे लोग एक-एक करके घुसते हैं]

दो : अरब-इज़राइल की सीमा पर फिर संघर्ष।

तीन : विश्वव्यापी तेल संकट।

चार : टेप देने में निक्सन की अनिच्छा।

पांच : संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा समिति की बैठक।

छह : कृत्रिम हृतपिंड पर एक और प्रयोग।

एक : पेरू में भूकम्प।

दो : बांगलादेश में साइक्लोन।

तीन : चिली में सैनिक विद्रोह।

चार : इटली में ट्रेन दुर्घटना।

पांच : जापान में मुद्रास्फीति।

छह : न्यूज़ीलैंड में टेस्ट मैच।

एक : राशन के चावल में वृद्धि।

दो : गेहूं के बदले ड्यू स्लिप (due slip)

तीन : गोदामों में लाखों रुपये की चीनी बर्बाद।

चार : पेट्रोल के दाम में वृद्धि की संभावना।

पांच : ट्रेन के आवागमन में फिर रुकावट।

छह : परीक्षा फिर स्थगित हो गई।

एक : हमें भविष्य में और भी दुर्दिन का सामना करने के लिए प्रस्तुत रहना है।— प्रधानमंत्री

दो : राजकाज की खातिर ही मुझे वार-बार राजधानी जाना पड़ता है—मुख्यमंत्री

तीन : तेल के विषय में व्यवसायियों के साथ कोई समझौता नही हुआ है। —खाद्यमंत्री

चार : शहरों में फुटपाथ की व्यस्था करने का अधिकार नगरनिगम को है। —निगमाध्यक्ष

पांच : आध्यात्मिकता द्वारा ही देश समृद्ध हो सकता है। —जगत्‌गुरु शंकराचार्य

छह : सार्थक जन्म हमारा, हमने जन्म लिया इस देश में। —कविगुरु रवीन्द्रनाथ

[साइरन—नौ वजे का भोंपा वजता है। सब लोग घड़ी मिलाते है। इसके वाद ट्रेन वनाकर खड़े हो जाते है। पहले ट्रेन की ध्वनि। फिर एक चक्कर मारकर सब विखर जाते है मानो ट्रेन के डिब्वे में वैठे हों]

एक : अच्छा, आप लोग वरावर रेल से आते जाते हैं, आप लोगों से मैं एक वात कहूं। देखिए आप सब ही पेन का इस्तेमाल करते हैं। मैं आज आप लोगों को एक पेन दिखाता हूं। इसका नाम है फुंग सिंग। आप यह कह सकते हैं कि यह चाइनीज पेन है। पर नही, यह चाइनीज पेन नही है। इस तरह की चाइनीज पेन का दाम पड़ता है अठारह

रुपया। पर आप लोगों को यह पेन मिलेगी केवल एक रुपए में—केवल मात्र एक रुपये मे। और तीन पेन एक साथ लेने से दाम होगा अढ़ाई रुपये। लिखकर देखिए—असली चाइनीज पेन जैसा लिखती है। वैसी ही बनावट, उतनी ही मजबूत और दाम केवल एक रुपया। बोलिए भाई साहब, एक चुन लीजिए। इस दाम में ऐसी पेन केवल रेल पर ही मिलती है। कम्पनी अपने विज्ञापन के लिए इसे केवल एक रुपये में बेच रही है। तीन एक साथ लेने से अढ़ाई रुपया दाम। बोलिए भाई, किसको दूं।

दो : लॉजेन्स, लॉजेन्स। खट्टा, तीता, मीठा, नमकीन-चार तरह का स्वाद मिलेगा—चटनी लॉजेन्स-दस पैसे जोड़ा। मुंह में डालिए और प्यास गायब। खट्टा, तीता, मीठा, नमकीन, रस ले-लेकर खाइए। एक लॉजेन्स आधे घन्टे तक मुंह में टिकेगा। दस पैसे जोड़ा—कहिए साहब—लॉजेन्स, लॉजेन्स।

तीन : पानी चाहिए बाबूजी, पानी? पानी चाहिए—पानी?

चार : पान बीड़ी सिगरेट।

पांच : चाय। चाय गरम। चाय चाय चाय गरम।

छह : (भिखारिन का गाना)
गरीबों की सुनो वो तुम्हारी सुनेगा
तुम एक पैसा दोगे वो दस लाख देगा।

एक : (हठात् चिल्लाकर) डलहौजी, डलहौजी, धरमतल्ला।

[सबलोग दौड़कर उसे, एक को, पकड़कर ऐसे भूल जाते हैं जैसे चमगादड़ छत पकड़ कर लटक गया हो]

दो : अरे भाई, पैर ज़रा सा, ज़रा सा, भाई साहब ज़रा सा पैर, एक पैर ज़रा सा—

तीन : अरे आपको पैर रखना है इसलिए मेरे ही पैर पर चढ़ गए। अच्छा तमाशा है।

दो : क्या करें भाई साहब। फुटबोर्ड पर तो तिल धरने की जगह नहीं है।

तीन : तो इसके बाद वाली बस ही पकड़ते।

दो : वे लोग भी कहते, इसके बाद वाली बस ही पकड़ते। तो क्या जवाब देता ?

एक : जाओ, ठीक है।

चार : रोक के, रोक के, उतरना है—

पांच : अब सीधे डलहौजी पहुंचकर उतरिएगा साहब।

चार : डलहौजी पर उतरिएगा—माने ? मेरी दुकान यहां पर है।

पांच : डलहौजी पर भी बहुत सी दुकानें हैं।

दो : अरे भाई साहब। जरा सा आगे बढ़िए न। ओफ, इतनी जगह है आगे फिर भी कोई नहीं बढ़ रहा है।

तीन : बंगालियों को कभी आज तक आगे बढ़ते देखा है ?
पांच : ओ, भाई साहब। मेरी धोती की चुन्नट आपने अपने पॉकेट में रख ली है।
चार : ऐं ? सच ? तो मेरी चुन्नट कहां गई ?
पांच : यह रही यहां झूल रही है।
चार : ओ हां, ठीक है।
पांच : ओ साहब, दोनों ही अपने पॉकेट में डाल लीं ? कम से कम एक तो मुझे दीजिए।
छह : कन्डक्टर, रोक के। ज़रा साइड दीजिए न, उतरना है।
तीन : यह लीजिए, निकल जाइए। अरे धक्का देकर निकल जाइए न।
दो : ओह। ऑफ़िस टाइम में औरतें चढ़ती ही क्यों हैं बस में ?
छह : हम लोगों को भी ऑफ़िस जाना होता है, समझे ?
दो : तो लेडीज़ ट्राम में जातीं।
चार : ओ भाई साहब। क्या फालतू बक रहे हैं। औरतों के साथ बात करने की भी तमीज़ नहीं है ?
दो : क्यों, क्या कह दिया मैंने ?
पांच : ओ हो। जाने दीजिए, जाने दीजिए।
छह : रास्ता छोड़िए, रास्ता छोड़िए, नीचे उतरना है।
एक : ज़रा नीचे उतरकर खड़े हो जाइए न। देख नहीं रहे हैं लेडीज़ उतर रही हैं ?

[छह उतरती है]

जाओ ठीक है।

छह : एइ, रोक के, रोक के। मेरी चप्पल—मेरी चप्पल।

पांच : कनइसोसनर आ जाइएगा। चप्पल मिल जाएगी।

[बस चली जाती है। छह भी एक पैर में चप्पल पहने चली जाती है। कारखाने का भोंपू, स्कूल का घंटा। 'तीन व्यक्ति मशीन बन जाते हैं और आवाज़ करते हुए मशीन चलने का अभिनय करते हैं। बाकी तीन व्यक्ति अलग-अलग खड़े होते हैं]

चार : सेंतीस रुपया बीस पैसा। 'सेंतीस बीस। अड़तिस पचास। अड़तिस पचास। पेंतीस रुपया पचहत्तर। तीन परसेन्ट। सेवेन हाफ परसेन्ट। कर्ज़। अमानत। चालान। शेयर। डिविडेन्ट। बोनस। इक्विटी। लिक्वीडेशन।

पांच : टन। हन्डर। पाउन्ड। किलोग्राम। मिलीग्राम। फुट। मीटर। गैलन। पाइन्ट। लिटर। डज़न। ग्रोस। बस्ता। पेटी। वैगन। पैकेट। फायल। क्विन्टल।

छह : फोर सिक्स थ्री फाइव टू फोर—यस सर। हैलो—हां बात कीजिए। हैलो ट्रंक कॉल फ्रॉम बाम्बे। हैलो थ्री फोर एट टू डबल फोर। हैलो—बात

कीजिए। हैलो हैलो—आउट ऑफ़ आर्डर। हैलो—
आप लाइन छोड़ दीजिए तो। हैलो इन्गेज्ड। हैलो
—लाइन बिजी—होल्ड ऑन प्लीज।

[सब एक साथ चल रहा है। दो-तीन
बार लोग जगह या पेशा बदल सकते हैं।
इसके बाद फिर भोंपू की आवाज]

एक : वन सेवेन्टी—चार रुपया। हाउस फुल। लेना है
साहब ? वन सेवेन्टी—चार रुपया।

दो : दो नम्बर पर एक मोगलाई पराठा। सात नम्बर—
दो चाय। दो रुपया चालीस पैसा। दो ठो फिश
फ्राई होगा।

तीन : (रियाज) सा रे गा, रे गा मा'''

चार : (टेनिस) ठा। ठा। फिफ्टीन लव। ठा ठा ठा ठा
थर्टी फिफ्टीन। ठा ठा ठा — फोर्टी फिफ्टीन।
ठा ठा—गेम।

पांच : तुम कल इतनी चुप-चुप क्यों थीं ?

छह : मैं ? तुम्हीं तो मुंह फुलाकर बैठे थे।

[एक घंटा बजाना शुरू करता है। ग्या-
रह बजा। वे लोग धीरे-धीरे चले जाते
हैं। रोशनी कम होती है। बूढ़े का प्रवेश]

बूढ़ा : जुलूस, जुलूस। मैं खो गया हूं। मैं हर गली सड़क
में अपना रास्ता खोज रहा हूं। हर जुलूस में
खोज रहा हूं। घर लौटने का रास्ता। पुराना

घर नहीं—दूसरा घर। सचमुच का घर। सचमुच का सच्चा घर। जुलूस। जुलूस।

[वे लोग अब तक जा चुके हैं। बूढ़ा भी जाने लगता है। मुन्ना का प्रवेश]

मुन्ना : जुलूस, जुलूस। राजपथ पर जुलूस, जनपथ पर जुलूस, केवल जुलूस। हर रोज़, हर रोज़ राजपथ पर, जनपथ पर, जुलूस के पैरों के नीचे पिसा जा रहा हूं, मर रहा हूं, खून हो रहा हूं। जुलूस,जुलूस।

[बूढ़ा चला जाता है। मुन्ना भी चला जाता है। अंधकार। हठात् कोतवाल की चीख]

कोतवाल : खबरदार!

[रोशनी जलती है। कोतवाल खड़ा है]

किसी का खून नहीं हुआ है। कोई नहीं खोया है। सब ठीक है। (चिल्लाकर) शुरू करो···ओ···ओ··· जुलूस शुरू करो। आगे बढ़ाओ···ओ···ओ···ओ···

[दौड़ते-दौड़ते बाहर निकल जाता है। छह को छोड़कर बाकी सब कोरस के लोग बैंड पार्टी बनाकर भीतर घुसते हैं। 'चल चल चल मेरे हाथी' गीत की धुन बजाते हैं। इसके बाद जुलूस शुरू होता है। एक के बाद एक अलग-अलग जुलूस। रथयात्रा। मुहर्रम—हसन,होसैन

क्रिस्मस कैरोल्स—गाना—ओह् कम !
लेट अस ऐडोर हिम ! पूजा के समान—
काली माई की जय। बाबा तारकनाथ
का जुलूस—'भोला बाबा पार करेगा।
बोलो शंकर भगवान की जय' कहकर
सब दंडवत करते हैं। इसके बाद सब
इकट्ठा होते हैं]

कोरस : गुरुदेव। गुरु गुरु गुरुदेव।

[सब दरवाज़े की ओर दौड़ते हैं। गुरुदेव
का प्रवेश। प्रणाम। आशीर्वाद। गुरुदेव
को कंधों पर उठाकर एक बार घुमाया
जाता है]

गुरुदेव : मनुष्य का जन्म होता है, शिशु के रूप में। शिशु ही राष्ट्र के भविष्य हैं। शिशु बड़े होकर कार्यकर्त्ता बनते हैं और कार्यकर्त्ता ही देश के वर्त्तमान हैं। कार्यकर्त्ता आगे चलकर वृद्ध होते हैं। वृद्ध ही राष्ट्र का अतीत हैं। हमारे इस महान देश का अतीत भी महान है। महान वर्त्तमान, महान भविष्य—सबको एकाकार करके। एक महान कालजयी समन्वय स्थापित करना होगा। अतीत, वर्त्तमान, भविष्य सबको एक सूत्र में बांधना होगा। और वह सूत्र है—धर्म।

[गुरुदेव को कंधों पर से उतार दिया
जाता है। वे चले जाते हैं। कोरस गाना

आरंभ करता है]

कोरस : (गाना) हम एक हैं, हम एक हैं हम एक हैं
एक है अपनी जमीं, एक है अपना जहां
एक है अपना चमन, एक है अपना वतन।
अपने सभी सुख एक हैं, अपने सभी दुख एक हैं
आवाज दो हम एक हैं, हम एक हैं।

नारा : वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

गाना : वंदे मातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज, शीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम्।
वंदे मातरम्।

दो : जननी जन्मभूमि की खातिर बलिदान होने के लिए ही तुम्हारा जन्म हुआ है।

तीन : जय। अंग्रेज़ बहादुर की जय। जय धर्मावतार सरकार बहादुर की जय।

(गाना)

गॉड सेव अवर नोबल किंग।
लाग लिव द ग्रेशस किंग।
गॉड सेव द किंग।

चार : डेथ टु द ब्रिटिश डॉग्स्। (बम फेंकता है)

पांच : डेथ टु द टेररिस्ट्स्। (गोली मारता है)

(गाना)

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।

एक : स्वराज्य।

दो : अहिंसा।

तीन : असहयोग।

चार : सत्याग्रह।

पांच : चरखा।

एक : (नारे के स्वर में) हिंदू-मुस्लिम, एक हो।

दो : क्विट इंडिया

तीन : डू ऑर डाइ।

पांच : ब्रिटिश साम्राज्यवाद—भारत छोड़ो।

एक : लड़के लेंगे पाकिस्तान।

एक, दो : अल्लाहो अकबर।

तीन, चार,
पांच : वंदे मातरम्।

कोरस : मारो साले को। मारो साले को।

[दो दलों में मारामारी। सब गिर पड़ते हैं। उसके बाद उठकर थके पैरों से चलना शुरू करते हैं। दर्शकों के पास जाकर कहते हैं]

: ओ बाबूजी बता सकते हैं—रिफ्यूजी कैंप यहां से और कितनी दूर है? हम कल से चलते-चलते थक गए हैं। बाबूजी, आपको मालूम है?

(गाना)

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा

एक : (नारे के स्वर में) यह आजादी—झूठी है।

कोरस : भूलो मत। भूलो मत।

(गाना)

नाक देकर नरहन पाया ढम ढमा ढम ढम।
देकर जान जानवर पाया छम छमा छम छम।

एक : वंदे मातरम्। जय हिन्द। स्वाधीन भारत की जय।

[कोरस के लोग अलग-अलग जगहों पर गर्दन और पीठ नीची करके खड़े होते हैं। गुरुदेव का प्रवेश। वे एक-एक करके सबकी पीठ पर बैठ कर एक-एक बात कहकर आगे बढ़ जाते हैं।]

गुरुदेव : आप लोग याद रखिए, हमारे देश की एक सुदीर्घ प्राचीन परम्परा है। भूलिए मत स्वाधीनता संग्राम के उन अगणित शहीदों को जिन्होंने अपने प्राण न्योछावर किए हैं। भूलिए मत अग्नियुग के उन क्रांतिकारी वीरों की गाथा को जो इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों से लिखी गई है। याद रखिए हमारी भारत भूमि को जिस पर मनु, पाराशर, कालिदास, भवभूति, सीता, सावित्री, श्री चैतन्य एवं गांधीजी जैसी महान आत्माओं ने जन्म लिया। याद रखिए, अहिंसा की शक्ति अपरिमित है। भूलिए मत, विश्व में आध्यात्मिक चेतना के विकास का दायित्व हमारे ही कंधों पर है। भारतवर्ष एक महान गणतंत्र है। भारतीय

संविधान के मौलिक अधिकारों को भूलिए मत। याद रखिए—हरित क्रांति, बैंक राष्ट्रीयकरण, परिवार-परिकल्पना, अमरीकी सहायता, मीसा में गिरफ्तारी।

[गुरुदेव का प्रस्थान । कोरस एक दूसरे के ऊपर से उछल करके आगे बढ़ता है]

एक : स्वाधीनता का रंग गेरुवा है।

दो : क्रांति का रंग हरा है।

तीन : पॉकेट का रंग लाल है।

चार : बाजार का रंग काला है।

पांच : सरसों का रंग पीला है।

कोरस : बाजार के नियामक श्रीकृष्ण की जय। बाबा कालाबाजार के चरणों में पांय लागूं महाराज। काला बाबा पार करेगा। वोट फॉर—कालाराम बाजारिया।

एक : चावल।

दो : दाल।

तीन : तेल।

चार : चीनी।

पांच : मैदा।

एक : कोयला।

दो : भूसी।

तीन : केरॉसिन।
चार : वेबीफूड।
पांच : टैक्स्ट बुक।
कोरस : (नारा) वोट फॉर—कालाराम बाजारिया।
[छह दरवाजे के पास आकर बैठती है। वस्त्र के नाम पर बदन पर फटी हुई सफेद धोती भर है]
छह : ओ बा···बू···जी। मा···ता···जी···एक बासी रोटी मिले। बा···बू···जी······।
[केवल छह के ऊपर प्रकाश है। दूसरे लोग अलग-अलग जगहों पर खड़े हैं। कोरस फुसफुसाकर बोल रहा है]
कोरस : वोट फॉर—कालाराम बाजारिया। वोट फॉर कालाराम बाजारिया।
छह : एक बासी रोटी दे दे माई तेरा भला हो···।
[मुन्ना दौड़ता हुआ भीतर आता है। छह के पास जाता है]
मुन्ना : चुप करो। चुप करो, चुप करो, चुप करो···ओ ···ओ··· ओ।
[छह चुप नहीं होती, उसकी ओर देखती भी नहीं। कोरस के सब लोग एक-एक करके मुन्ना को धक्का देकर एक दूसरे के पास ठेलते रहते हैं। मुन्ना उन्हीं से

घिरा रहता है]

कोरस : हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा। हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा।...

मुन्ना : (मौत की चीख) आ...आ...आ...आ।

[अंतिम धक्के में मुन्ना बाहर चला जाता है। कोतवाल का प्रवेश। छह को गर्दनिया देकर बाहर निकाल देता है]

कोतवाल : किसी का खून नहीं हुआ है। जारी रखो।

[चला जाता है। एक कोमल स्वर में दर्शकों से कहता हुआ आगे की ओर बढ़ता है। दो, तीन इत्यादि भी उसके पीछे-पीछे आगे की ओर बढ़ते हैं]

एक : विश्व ब्रह्माण्ड में सूर्य एक नक्षत्र है। पृथ्वी सूर्य का ग्रह है। मनुष्य पृथ्वी का श्रेष्ठतम जीव है।

दो : सृष्टि के आरंभ में सभी मनुष्य समान थे। किन्तु वे असभ्य थे।

तीन : सारे दिन की मेहनत के बावजूद वे पेट भरने लायक अन्न भी नहीं जुटा पाते थे इसीलिए वे एक जैसे थे।

चार : इसके बाद मनुष्य ने पशुपालन सीखा, कृषि करना सीखा, और धीरे-धीरे खाने-पीने के बाद बचने भी लगा।

पांच : इसी अतिरिक्त बचत ने सभ्यता को जन्म दिया।

पास जाते हैं। गुरुदेव को कंधों पर उठा-
कर वे सब चलने लगते हैं]

गुरुदेव : सभ्यता का सबसे बड़ा शत्रु कौन है ?

कोरस : साम्यवाद।

गुरुदेव : सभ्यता का धारक, वाहक और रक्षक कौन है ?

कोरस : प्रभु आप।

गुरुदेव : कोई चिंता नहीं है बच्चो, तुम लोगों को मैं सभ्य बनाकर रखूंगा। साम्यवाद तो पशुओं का धर्म है। भूलो मत। तुम लोग पशु नहीं हो। मनुष्य हो।

कोरस : पर प्रभु, हम लोग तो दुःख के मारे मरे जा रहे हैं।

गुरुदेव : मरकर स्वर्ग मिलेगा। तब सुख मिलेगा। स्वर्ग-सुख। पशुओं के लिए स्वर्ग नहीं है। तुम लोग मनुष्य होकर मर सको यही आशीर्वाद देता हूं।

[गुरुदेव को उतार देते हैं। गुरुदेव चले
जाते है। गाना]

कोरस : मनुष्य हो, मनुष्य हो, मनुष्य हो, मनुष्य हो।

[नाचते-नाचते थक जाते है। गले से
आवाज भी नहीं निकलती है]

एक : तीन साल हो गए, अभी तक नौकरी नहीं मिली। बाबूजी रिटायर कर गए हैं।

दो : कारखाने में लॉक आउट हुए छत्तीस दिन हो गए। घर में चूल्हा तक नहीं जला।

तीन : बेसमय की बरसात से सारा धान सड़ गया, ऊपर से महाजन के कर्ज का पहाड़ सिर पर।

चार : तेल में मिलावट के कारण सारा घर बिस्तर पर पड़ा है, डॉक्टर बुलाने को पैसा नहीं है।

पांच : भाई को पुलिस पकड़ कर ले गई। मार-मारकर जान निकाल दी।

एक : छन्दा ने कह दिया है, वह मुझसे ब्याह नहीं करेगी।

दो : लड़के ने परीक्षा नहीं दी है। सारे दिन गुंडागर्दी करता फिरता है।

तीन : भैया भाभी को लेकर घर से अलग हो गए। चिट्ठी तक नहीं लिखते।

चार : घर में किसी की किसी से नहीं पटती। चौबीस घंटा खिटखिट।

पांच : आर्ट स्कूल में फर्स्ट आया हूं पर चित्र बनाना नहीं आता। इसलिए साबुन की कनवेसिंग करता हूं।

[सब लंबी-लंबी सांसें भरते हैं]

कोरस : प्रभु, अब और नहीं होता।

[गुरुदेव का प्रवेश। हाथ में एक बोतल है]

गुरुदेव : यह लो। ले जाओ।

[सब दौड़कर आते हैं]

कोरस : क्या प्रभु ?

गुरुदेव : अमृत। सब दुःख मिट जाएगा।

[बोतल देकर गुरुदेव का प्रस्थान। ये लोग एक-एक करके बोतल से चुस्की लेते हैं। वहकी हुई आवाज़ में गाना और लड़-खड़ाते कदमों से नाच]

कोरस : (गाना) मनुष्य हो। मनुष्य हो। मनुष्य हो। मनुष्य हो।

[नाचते-नाचते दरवाजे के पास बोतल रखकर वे चले जाते हैं। बूढ़े का प्रवेश। बोतल उठा लेता है]

बूढ़ा : सुरा। सोमरस। लिकर। दारू। अपने आपको भुला देने की सबसे बढ़िया दवाई। भुला दो, खो जाओ, केवल खो जाओ। खोजने को मारो गोली, मुन्ना तो खो गया है, कब का। बाजार में, हाट में, भीड़ में, जुलूस में, खोजते-खोजते आज बूढ़ा हो गया है। तब भी खोजने का अंत नहीं है। तब यह मां काली नम्बर दो? यह क्यों है हाथ में? ओ समझा, कॉमिक रिलीफ--दुनिया के इस सड़े हुए थियेटर में हास्य रस का मसाला--कॉमिक रिलीफ।

[एक चुस्की लेता है और साथ ही शराबी की भूमिका शुरू हो जाती है]

(गाता है) कौन गली गए श्याम? अरे श्याम रे,

कौन गली में गए वावा ? (गाना रोकता है) श्याम कहीं भी गया हो, यह रास्ता किधर गया है? कम से कम इसका पता तो लगना ही होगा। तब से चल रहा हूं। साला घूम-फिरकर उसी जगह। अब और चलना आसान काम नही है। एक बार दाहिनी ओर का रास्ता ठेलता है तो एक बार बाईं ओर का। ठहरो बावा, ठहरो, इस बार उत्तर-दक्षिण ठीक करके ही आगे बढ़ूगा। जैसे जहाज़ चलता है। कम्पास का कांटा सीधा उत्तर। धत् साला, कम्पास ही नहीं है। उत्तर किधर है? सुबह सूरज की ओर मुंह करके खड़े होने पर बायें हाथ को उत्तर होता है। हां-हां, देखा, स्कूल में पढ़ाया हुआ अभी तक याद है। ब्रिलियन्ट स्कॉलर! सूरज किधर है? हत् तेरे की, डूब गया। तब? हां ध्रुवतारा उत्तर दिशा में होता है, ठीक। इनमें ध्रुवतारा कौन-सा है भाई। सब तो तारे हैं—इनमें से ध्रुव कौन-सा है यह कैसे पता चलेगा। शायद यह वाला है। ठीक है। इसी को पकड़कर चलते हैं, देखें उत्तर मिलता है कि नहीं। (आकाश की ओर देखते-देखते चलने में एक दर्शक के ऊपर जा गिरता है) माफ कीजिएगा सर। रास्ता भूल गया था। धत्तेरे की, इस ओर तो रास्ता ही नहीं है, तब फिर उत्तर की ओर जाऊंगा कैसे? ना, इस

ओर नहीं जाया जा सकता। सिर्फ उसी ओर जाया जा सकेगा। यह कौन-सी दिशा है? ठहरो, यह हुआ उत्तर, यह बायां हाथ, नाक की सीध में सूरज, पूरब, उल्टी तरफ पश्चिम। चलो पश्चिम की तरफ ही चलो। वाह, मेरे घूमने की देर नहीं कि फिर घूम गया। इधर कौन-सी दिशा है? इधर यदि पश्चिम हो तो यह पूरब। सूर्य देवता। इसका मतलब—धत्तेरे की, इस जोड़-बाकी के फेर में नशा ही टूटा जा रहा है। इससे अच्छा जिधर पैर उठे उधर ही चलते चलो। कौन गली गए श्याम। रास्ता बंद—कौन गली—

[इतना कहते-कहते एक चक्कर घूमकर आता है। अचानक खट् से बत्ती गुल हो जाती है]

यह क्या? आज माल में क्या था? एक बोतल में ही ब्लैक आउट। चलो अच्छा ही हुआ। आउट हो जाने से अब चलना नहीं होगा। अब सुबह उठकर ही सूरज देखकर बायें हाथ को उत्तर। (कुंडली मारकर लेट जाता है दबे हुए गले से गाने की एक लाइन गाता है)

इसी गली में सोऊं श्याम।

[छाया की तरह कोरस का प्रवेश—

निःशब्द। वे धीरे से कमरे में विखर जाते हैं। वहुत धीमी आवाज में अंधेरे में ही वातें करते हैं]

एक : वत्ती मत जलाना। देखकर चलना।

दो : किस ओर गया है, बोलो तो।

तीन : लगता है, इस ओर।

चार : *जिस ओर भी गया हो, आज वच्च जी की खैर नहीं।*

पांच : यह रहा, जा रहा है, देखो छिप गया—

एक : चुप, चिल्लाना मत।

दो : तुम उस तरफ जाकर रास्ता रोको, मैं इधर हूं।

तीन : देखो, कहीं चुपके से खिसक न जाए।

चार : खिसक जाएगा? हुंह, इतना आसान नहीं है।

पांच : हां, रेडी?

[पहले की तरह चीख। मुन्ना गिर पड़ता है। वह कोरस के साथ ही अंधेरे में भीतर घुसा था। वाकी लोग विना आवाज़ किए खिसक जाते हैं। वूढ़े की आवाज़ सुनाई पड़ती है]

वूढ़ा : यह नदी में क्या गोलमाल हो रहा है भाई? मेरा तो कान फटा जा रहा है।

[दरवाजे से टॉर्च की रोशनी पड़ती है। कोतवाल की आवाज़]

कोतवाल : सब ठीक है। जाओ, घर जाओ। (टॉर्च बंद करके कोतवाल चला जाता है)

बूढ़ा : (मानो अपने से बात कर रहा हो) घर जाओ ! सूरज डूबकर गायब हो गया। ध्रुवतारा सारे आकाश में चक्कर काट रहा है। चार कदम चलने पर तो रास्ता बंद मिलता है—और कह रहा है 'घर जाओ'। हजारों नशाखोर देखे हैं, पर तुम्हारे नशे का जवाब नहीं। और इस सबके ऊपर, आउट हो गया हूं यह तो उसे पता ही नहीं था।

[रोशनी जल जाती है]

बत्ती ? हूं, यह क्या ? आउट से इन ? पर, सूरज तो उगा ही नहीं ? (उठकर खड़ा होता है) मर गए। फिर चक्कर काटो। आउट नहीं होने पर तो घर का रास्ता खोजना ही पड़ेगा। यही नियम है। (चलना शुरू करता है) क्या रद्दी माल दिया था, साला सूरज भी नहीं, कुछ भी नहीं—आउट से इन। (जमीन पर गिरी, मुन्ना की देह से ठोकर लगती है) कौन ? देखो, साला एक और नशाखोर। एई, उठो, उठो। बत्ती जल गई है, घर जाना होगा। उठो, ए।

[मुन्ना उठता है]

मुन्ना : मेरा खून हो गया है।

बूढ़ा : बहुत अच्छा हुआ। चलो, घर चलो।

मुन्ना : कैसे जाऊं ? मैं तो मर गया हूं।

बूढ़ा : ऐसा ही लगता है। मुझे भी लगा था — ब्लैक-आउट। चलो।

मुन्ना : कहां जाऊं ?

बूढ़ा : और कहां ? घर। कहां है तुम्हारा घर ?

मुन्ना : घर नहीं है। पहले था। अब नहीं है। मेरा खून हो गया है।

बूढ़ा : समझ गया। तुम रास्ता भूल गए हो। इतना घुमा-फिराकर कहने की क्या जरूरत है, हें ? यही तो तुम लोगों की पीढ़ी का दोष है। सीधे-सीधे बात नहीं करोगे, खाली कविता बनाओगे।

मुन्ना : आप समझ नहीं रहे हैं।

बूढ़ा : खूब समझ रहा हूं। शराबी हूं इसलिए यह मत समझना कि मेरी सोचने-समझने की शक्ति गायब हो गई है। बहुत कठिन-कठिन जोड़-बाकी के सवाल करके यहां पहुंचा हूं। समझे ? अब चलो तो।

मुन्ना : कहां चलूं ?

बूढ़ा : ओ हां। ठीक ही तो। चलने का रास्ता ही गड़बड़ा गया है। अच्छा कोई बात नहीं, मेरे घर चलो। मेरा घर उत्तर में है। उत्तर किस ओर है, बता सकते हो ?

मुन्ना : मालूम नहीं।

बूढ़ा : कभी मालूम था ? ध्रुवतारा कौन-सा है, बता

सकते हो ?

मुन्ना : ना।

बूढ़ा : सूरज किस ओर उगता है, मालूम है ?

मुन्ना : पूरब।

बूढ़ा : वह तो मुझे भी मालूम है, भाई मेरे। पर पूरब दिशा है किधर ?

मुन्ना : जिधर सूरज उगता है।

बूढ़ा : जरा ध्यान देकर मेरी बात सुनो। प्रश्न को समझो। पूरब दिशा—मतलब सूरज जिस दिशा में उगता है उस दिशा को उंगली से दिखा सकते हो ?

मुन्ना : इस तरफ।

बूढ़ा : (खुश होकर) वाह ! वाह ! इस तरफ। जरा उस तरफ मुह करके खड़े हो जाओ तो। अब बायां हाथ उठाओ। मिल गया। चलो। (उठे हुए बाएं हाथ को खींचकर एक कदम चलता है)

मुन्ना : किधर जाऊं ?

बूढ़ा : उत्तर की ओर। सीधे बाएं हाथ को। (मोड़ तक पहुंचता है) मरे। उस तरफ तो बंद है। (बाएं हाथ की ओर खुला रास्ता रखकर, घूमकर खड़ा होता है)

मुन्ना : कहां ? नहीं तो। इधर तो रास्ता खुला है।

बूढ़ा : मिल गया चलो।

[मुन्ना बराबर बाएं हाथ का रास्ता खुला

रखकर, घूमता-फिरता आगे बढ़ता जा रहा है। बूढ़ा परम आनन्दित होकर उसके पीछे-पीछे चलता है]

कौन गली गए श्याम।

[दोनों पहले वाली जगह पर जा पहुंचते हैं]

एई, एई रुको तो। जगह तो पहचानी हुई लग रही है? लगता है यहीं पर तुम्हारे साथ मुलाकात हुई थी।

मुन्ना : हां। यहीं पर।

बूढ़ा : तब? शराबी हूं तो क्या? रास्ता पहचानने में मुझसे कभी भूल नहीं होती। एक बार जिधर से चला जाऊं उस रास्ते को ठीक पहचान लेता हूं। इसीलिए रास्ता खो जाने पर मुझे खट् से पता लग जाता है।

[मुन्ना लेट जाता है]

यह क्या? लेट क्यों गए?

मुन्ना : मेरा खून हुआ है। यहां।

बूढ़ा : अरे धत्तेरे की। तब से खाली, खून हुआ है, खून हुआ है! चलो उठो।

[मुन्ना हिलता नहीं]

क्या हुआ? नहीं उठोगे?

[कोई जवाब नहीं]

ना, आज अब घर लौटना नहीं हो सकेगा।

[झांझ-करताल लेकर कोरस का प्रवेश]

कोरस : प्रेम मुदित मन से कहो, राम राम, राम।

बूढ़ा : यह रहे। ओ भाई लोग। उत्तर किस ओर है, बता सकते हे? (उनके पीछे दौड़ता है। उनका गाना चालू रहता है) ध्रुवतारा? सूर्य? वायां हाथ? ओ भैया रामचन्दर।

[वे पहले की तरह मुन्ना की देह को कंधों पर उठा लेते है]

कोरस : राम नाम सत्य है। राम नाम सत्य है।

[चले जाते हैं। बूढ़ा रुक जाता है—आंखों में विस्मय का भाव]

बूढ़ा : राम नाम सत्य है? माने…सचमुच ही उसका खून हो गया क्या?

[कोतवाल प्रकट होता है]

कोतवाल : (डांटकर) किसका खून हुआ है। ? किसी का खून नही हुआ है। जाओ, घर जाओ।

बूढ़ा : (बड़बड़ाकर) फिर वही, नशाखोर।

कोतवाल : क्या कहा?

बूढ़ा : कह रहा था—घर का रास्ता मिल नहीं रहा है भैया।

कोतवाल : मैं वताता हूं। चलो चलना शुरू करो।

बूढ़ा : किस तरफ चलूं?

कोतवाल : जिस तरफ तुम्हारी इच्छा हो।

बूढ़ा : (बड़बड़ाता हुआ) साला, शराबी के हाथ में पड़ गए। (बायां हाथ उठाकर, बाईं ओर चलता है)

कोतवाल : दाहिने जाओ। वाएं। दाहिने। दाहिने। वाएं।

[कोतवाल के निर्देश का अनुसरण करते-करते बूढ़ा बाहर जाने वाले दरवाज़े के पास पहुंचता है]

यही घर का रास्ता है। मिल गया ?

बूढ़ा : मिल गया। पर उस लड़के का सचमुच खून हुआ है।

कोतवाल : क्या कहा ?

[उछलकर आकर बूढ़े का पीछा करता है। बूढ़ा भाग जाता है। कोतवाल चीखकर हुक्म देता है]

सामने से तेज चलेगा, तेज चल! एक दो-एक दो—

[कोरस कदम मिलाकर जल्दी-जल्दी भीतर घुसता है। विभिन्न स्थानों पर खड़े होकर कोरस के लोग दौड़ना शुरू करते हैं। एक-एक करके वात कहने के लिए खड़े होते हैं। फिर अपनी वात कहकर उसी जगह खड़े-खड़े दौड़ते हैं। कोतवाल का प्रस्थान]

एक : इस देश में ज़रूरत है मिलिटरी डिक्टेटरशिप

की। ज्यादा टेढ़ा-सीधा करने वालों को पीट-पीट कर ठंडा कर देने की।

दो : पार्क में देखा, लड़के-लड़कियां जोड़ा बना-बनाकर एक-दूसरे से सटे बैठे हैं। इस देश को हुआ क्या है ?

तीन : साली स्ट्राइक और घेराव। इसीलिए तो चीजों के दाम बढ़ रहे है।

चार : कल श्री ब्रह्मानंद जी की कथा सुनी। आहा, अमृत बरस रहा था।

पांच : दुनिया में सब साले लूटपाट करके खाते हैं तो हम भी क्यों न खाए ?

छह : सब लड़किया रोज तरह-तरह की साड़ियां पहनकर आती है। मैं एक की फरमाइश करूं तो, तो बड़ा भारी दोष हो जाता है !

[एक चक्कर खाकर फिर शुरू]

एक : हम लोगों का देश चिरकाल तक दुर्बल ही बना रहेगा ? अभी तक एटम बम बनाना भी शुरू नहीं किया है।

दो : ब्राह्मण का लड़का होकर छोटी जातवाली से ब्याह किया है। हुह, दिल लग गया तो जात-पांत सब भूल गए।

तीन : आजकल इन छोटे लोगों का हाल मत पूछो। रिक्शावाला भी अब आग दिखाने लगा है।

चार : पूरी दुनिया नास्तिक हो रही है। धर्म के नाम पर थोड़ा-बहुत इस देश में बचा था सो वह भी अब खतम हो चला।

पांच : मौज-मस्ती लो, बड़ी-बड़ी बातें बनाओ, यह हुई सार बात। बाकी सब फालतू है। बहुत-सी बड़ी-बड़ी बातें सुन चुका हूं।

छह : उस दिन शादी में—कितनी शर्म आई मुझे। बाबा आदम के जमाने की साड़ी पहन रखी थी—सबके सामने फट गई।

[फिर एक चक्कर]

एक : चाबुक, चाबुक की ज़रुरत है। उसके बिना कोई सीधा नही होने का।

दो : रसोईघर छोड़कर अब घर की बहुओं ने धींगड़ी बनकर नौकरी करना शुरू किया है—चौपट होने में और बाकी क्या रहा।

तीन : नौकर कह रहा है—तनख्वाह बढ़ाओ। नमक-हरामी की भी हद होती है।

चार : अमेरिका में आज हरेकृष्ण की धूम मची है, लोग पागल हो रहे हैं पर इस देश में किसी के कान पर जू नही रेंगती।

पांच : आज जाकर लड़की ने देखा—कल साला एक चिट्ठी झाड़ दूंगा। देखें, भाग्य में क्या लिखा है।

छह : हफ्ते में दो से ज्यादा सिनेमा नही देखती—और

उसी को लेकर इतना हल्ला-गुल्ला।

[फिर से दौड़। इस बार 'एक-दो' के बदले जुलूस-जुलूस की ध्वनि। एक खड़ा हो जाता है। बाकी लोग उसके पीछे जमा होते है। बैंड शुरू होता है—स्वर, 'सारे जहां से अच्छा।' उसके बाद गाना]

कोरस : जय भारत देश हमारा, यह है भारत देश हमारा
पंचरंग चोला पहिन जहां हम काटें जीवन सारा॥
यह है भारत······
बहुभाषा पहिरावा बहु औ, खान पान सब न्यारा
हिंदू मुस्लिम, सिख ईसाई, सबका अपना नारा॥
यह है भारत······
सिंध और गुजरात मराठा, द्राविड़ उत्कल वंगा
बात बात पर तू तू मैं मैं, बात बात पर दंगा॥
यह है भारत······

[गाते-गाते चलते रहते है। मुन्ना का दौड़ते हुए प्रवेश]

मुन्ना : (चिल्लाकर) वन्द करो! यह सब धप्पेवाजी बंद करो! यह सब असली बातें नहीं हैं। (दर्शकों से) आप लोग बैठे-बैठे यह सब क्यों बरदाश्त कर रहे हैं? आप समझ नहीं रहे हैं—यह सब बेकार की बातें हैं। धोखाधड़ी है। आप लोगों को भुलावे में डालने की कोशिश

है। मेरा खून हुआ है। रोज़ मेरा खून होता है। रोज़ खून होगा—असली वात यही है। रात के अंधकार में—दिन के गोलमाल के बीच रोज़ तुम लोग इस वात को ढांकने की चेष्टा करते हो। पर वैसा नहीं होगा। मैं हर्गिज ढांकने नहीं दूंगा। आप लोग ढांकने मत दीजिएगा।

[गाना उसी रूप में चलता रहता है। मुन्ना की वात शुरू होने के समय ही कोतवाल भीतर घुसता है। फ्रैंकेस्टाइन दैत्य की मुद्रा में वह इतनी देर मुन्ना के पीछे-पीछे चल रहा था। अव एक हाथ से उसका मुंह बंद करता है और दूसरे हाथ से उसे ऊपर उठा लेता है। कोरस गाते-गाते चला जाता है। गुरुदेव का प्रवेश]

गुरुदेव : (आंखें बड़ी-बड़ी करके चारों तरफ देखते हैं) क्या हुआ? यह गोलमाल कैसा?

कोतवाल : कुछ नहीं सर। सव ठंडा है।

गुरुदेव : ठीक है, ठीक है। मनुष्य को सुखी वनाओ, उसे शांति में रखो, एक सूत्र में वांधकर रखो। मनुष्य आनंद में हो। उसे शिल्प सिखाओ, सभ्यता सिखाओ, संस्कृति सिखाओ, आर्ट, कल्चर सिखाओ, रस में सरावोर कर दो। मन में जितने अनर्गल प्रश्न उठें, उन्हें रस की चादर से ढक दो। याद

रखो—मनुष्य पशु नहीं है। रस की बाढ़ में डूबना-उतराना केवल मनुष्य ही जानता है।

कोतवाल : यस सर।

[मुन्ना को लेकर बाहर निकल जाता है। *गुरुदेव का प्रस्थान। एक का प्रवेश*]

एक : आप लोग शांति से बैठें। कृपया गोलमाल न करें। कृपया और गानों के लिए अनुरोध न करें, अभी हमारे और बहुत से कलाकार बाकी हैं। आप लोग कृपया शांति बनाए रखें। अब गाना सुना रहे हैं—

[चला जाता है। कोरस में से एक व्यक्ति घूम-घूमकर राग पर आधारित गाना सुनाकर चला जाता है। उसके निकलने के ठीक पहले एक आदमी नाविक संगीत गाता है। उसके बाद एक आदमी भाव-भंगिमाओं सहित एक चलता हुआ फिल्मी संगीत सुनाता है। चौथा आदमी मार खाए हुए कुत्ते के रोने की आवाज़ करता है। अन्य व्यक्ति भी उसके साथ हैं। वे विभिन्न पशु-पक्षियों की आवाज़ और उनके जैसी उछलकूद करते हैं। कोतवाल एक बड़े डरावने कुत्ते की तरह चिल्लाकर उन लोगों को भगा देता है। कुछ भाग

जाते हैं, बाकी लोग दरवाज़े के पास जाकर गुरुदेव को कंधों पर उठाकर आगे बढ़ते हैं। छड़ी को अपनी दुम की तरह पीछे हिलाते-हिलाते और गुरुदेव की हर बात पर स्वीकारोक्ति के रूप में गुर्राते हुए कोतवाल उन लोगों के आगे-आगे चलता है]

गुरुदेव : परम्परा की शक्ति में—ईश्वर की भक्ति में—अहिंसा और शांति से—सामाजिक दायित्व से—व्यावहारिक बुद्धि से—परिकल्पना की प्रस्तुति से—विधिसम्मत पद्धति से—एकता की भित्ति पर—सहनशील नीति से-धैर्यशील प्रीति से-धीर-स्थिर गति से-कानूनी एकता के बंधन से—संविधान के परिप्रेक्ष्य में नेताओं की प्रति-श्रुति में—

[वे लोग चले जाते है। बूढ़े का प्रवेश]

बूढ़ा : जुलूस के कितने रंग हैं, कितने रूप हैं, कितने शब्द हैं, कितनी ध्वनियां है! जुलूस की पताका के रंगों में, पदचाप के बीच में कही खो गया हूं, इधर-उधर घूम रहा हूं, फिर रहा हूं, रास्ते-रास्ते पर, राजपथ पर, इस मोड़ से उस मोड़ तक मैं घूमता ही जा रहा हूं, खो गया हूं, घर का रास्ता खोजे नहीं पा रहा हूं—सचमुच के घर का रास्ता, सचमुच का सच्चा घर। रास्ता दिखाए—ऐसा

जुलूस कहां है ? वह देखो फिर से, फिर से जुलूस आया, नया जुलूस, वह आ रहा है। वह रहा।

[कोरस जुलूस बनाकर भीतर घुसता है]

कोरस : (नारे के स्वर में) कनसालिडेटेड पे स्केल—देना होगा, देना होगा। पे कमीशन का अन्तरिम सुझाव—चालू करो, चालू करो। गैरकानूनी छंटाई करना—नही चलेगा, नही चलेगा। कामॅरड दुर्गा मजूमदार पर लगाया हुआ शो कॉज़ नोटिस—हटाना होगा, हटाना होगा। ऑटोमेशन—रोकना होगा, रोकना होगा। (एक चक्कर पूरा करने के बाद पुनः नारे) छात्र-एकता — ज़िंदाबाद, ज़िंदाबाद। दुनिया के मजदूर—एक हो, एक हो। इनकलाब —जिंदावाद, जिंदावाद। साम्राज्यवाद के काले हाथ—तोड़ दो, मरोड़ दो। पूंजीवादी शोषण शासन—खतम करो, खतम करो।

[बूढ़ा उनके पीछे-पीछे चलता है। कान लगाकर सुनता है, आखें फाड़कर देखता है। बीच-बीच में वह पीछे छूट जाता है, फिर दौड़कर उनका साथ पकड़ लेता है। कोरस का प्रस्थान]

बूढ़ा : जुलूस-जुलूस। आ रहा है, आएगा। एक दिन आएगा। सचमुच का सच्चा जुलूस। कब आएगा?

कब ? कब ?

[बूढ़े का प्रस्थान । कोरस का पुन: प्रवेश]

कोरस : कॉमरेड लेनिन—जिंदाबाद । कॉमरेड स्टालिन—जिंदाबाद । कॉमरेड ट्राटस्की— जिंदाबाद । कॉमरेड महात्मा गांधी - जिंदाबाद । कॉमरेड नाथूराम गोडसे—जिंदाबाद । कॉमरेड माओ-त्से-तुंग—जिंदाबाद । कॉमरेड नेताजी—जिंदाबाद । कॉमरेड हो ची मिन्ह—जिंदाबाद । कॉमरेड इंदिरा गांधी—जिंदाबाद । कॉमरेड कैस्ट्रो—जिंदाबाद । कॉमरेड निक्सन—जिंदाबाद । कॉमरेड चारू मजुमदार—जिंदाबाद । कॉमरेड सोलजें-नित्सिन—जिंदाबाद । कॉमरेड राजेश खन्ना जिंदाबाद । कॉमरेड मार्टिन-लूथर किंग—जिंदा-बाद । कॉमरेड सांई बाबा—जिंदाबाद । कॉमरेड रवीन्द्रनाथ—जिंदाबाद । कॉमरेड वाडेकर—जिंदाबाद । जिंदाबाद, जिंदाबाद, जिंदाबाद !

[जुलूस चला जाता है । मुन्ना का प्रवेश]

मुन्ना : (चीखकर) बंद करो…ओ…ओ…ओ । मुझे तुम लोगों के इस जुलूस में बिलकुल आस्था नहीं है । सब जुलूस मौत का जुलूस है । केवल मौत का । मौत का । (चलना शुरू करता है) एक-दो-तीन-चार पांच-छह भोजन के अभाव में मेरी मृत्यु हो गई । इस धरती पर प्रति छह सेकेण्ड में भोजन न मिलने

के कारण मुझ जैसे एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है —बू···म! एक विस्फोट। एक बड़े शहर में ईंट पत्थर के ध्वंसावशेष में डेढ़ लाख 'मैं' मौत के मुंह में चले गए। ठांय···ठांय···ठांय···ठांय प्रतिदिन हजारों 'मैं' खून हो रहा हूं, लड़ाई के मैदान में खून हो रहा हूं! (फिर चीख) आप लोग रास्ते के दोनों ओर बैठे जुलूस देख रहे हैं। खून होते देख रहे हैं--खून। चुप मारकर बैठे खून होते देख रहे हैं, खून हो रहे हैं, खून कर रहे हैं : हां—खून कर रहे हैं। मैं कर रहा हूं। आप लोग कर रहे हैं—सब के सब खूनी हैं। हम सब खून करते हैं, खून होते हैं। चुपचाप बैठे खून कर रहे हैं, खून हो रहे हैं। बंद करो··· ओ · ओ··· ओ !

[दौड़कर जाते हुए कोरस का सामना होता है। सब गंभीर हैं। चलने-फिरने में सैनिकों की सी मुद्रा और लय। विभिन्न जगहों पर मुन्ना की हत्या की जाती है]

एक : शिरच्छेद।

दो : फांसी।

तीन : फायरिंग स्क्वॉड।

चार : गैस चैम्बर।

पांच : विमान आक्रमण।

[मुन्ना गिर पड़ता है। कोरस चला जाता

है। बूढ़ा आता है]

बूढ़ा : सुना? आप लोगों ने सुना? लगा जैसे कोई चीखा। मानों कोई मर गया। मर गया? मरने से कैसे चलेगा? लगा जैसे कोई लड़का चिल्लाया। मुन्ना, मुन्ना ही चिल्लाया होगा। पर मुन्ना तो मरा नहीं है।। मुन्ना तो खो गया है। इतने वर्षों से खोया हुआ मुन्ना अब बूढ़ा हो गया है। (मुन्ना के पास आकर) यह क्या? फिर से? उठो, उठो, जल्दी उठो।

मुन्ना : मेरा खून हो गया है।

बूढा : नहीं तुम्हारा खून नही हुआ है। तुम खो गए हो।

मुन्ना : मेरा खून कर दिया गया है, मैं मर गया हूं।

बूढ़ा : नहीं, मरे नहीं हो, खो गए हो, मेरी तरह।

मुन्ना : एक ही बात है।

बूढ़ा : एक ही बात है? पर खो जाने से तो खोजा जा सकता है और खोजने से पाया जा सकता है। मरने से खोजा जा सकता है? पाया जा सकता है?

मुन्ना : (उछलकर उठता है) बेकार की बात है। यह सब बेकार की बातें है—सब झूठ है। खोजने के लिए कुछ नहीं है, पाने के लिए कुछ नहीं है, केवल मौत है। (चलने लगता है)

बूढा : कहां चले?

मुन्ना : मरने, खून होने।

बूढ़ा : चलो, मैं तुम्हारे पीछे हूं।

[उसके पीछे चलता है। मुन्ना रुक जाता है]

मुन्ना : पीछे हूं माने ? पीछे क्यों हो ?

बूढ़ा : मेरे आगे चलने की बात थी। नही चल सका। उसके पहले ही रास्ता खो गया। इसीलिए पीछे हूं।

[मुन्ना उसके बगल से निकलकर उलटी तरफ चलने लगता है]

मुन्ना : मैं उस ओर जाऊंगा।

बूढा : (उसके पीछे होकर) ठीक है चलो, मैं तुम्हारे पीछे हूं।

मुन्ना : (रुककर) तुम क्यों मेरे पीछे-पीछे चल रहे हो ? लौट जाओ।

बूढ़ा : किधर लौट जाऊं ?

मुन्ना : घर लौट जाओ।

बूढ़ा : घर नहीं है। घर तो खो गया है। तुम्हारा घर है?

मुन्ना : ना। पर मै तो मर गया हूं।

बूढ़ा : ना, खो गए हो।

मुन्ना : जाओ, तुम चले जाओ।

[मुन्ना तेज़ी से चलना शुरू करता है। बूढ़ा उसके पीछे चलता है पर गति धीमी है। मुन्ना एक चक्कर घूमकर बूढ़े के पास आकर रुक जाता है। बूढ़ा रुककर

उसके लिए रास्ता छोड़ देता है]

बूढ़ा : जाओ, आगे निकल जाओ। मैं तुम्हारे पीछे हूं।

मुन्ना : (चलते-चलते थके हुए स्वर में) कहां जाऊं? वही एक ही तो रास्ता है। घूम-फिरकर वही रास्ता।

बूढ़ा : (पीछे चलते-चलते) और थोड़ा, उस मोड़ तक उस मोड़ के बाद क्या है—

मुन्ना : वही, एक ही रास्ता, वही रास्ता, वहीं—

बूढ़ा : फिर भी मैंने खोजा है। और थोड़ा, उस मोड़ तक घूमकर—

मुन्ना : खोजते-खोजते खो गए हो?

बूढ़ा : खो गया हूं, बार-बार खो जाता हूं—

मुन्ना : फिर भी वापिस नही लौटे?

बूढ़ा : फिर भी वापिस नही लौटा, लौटा नहीं जाता, खो जाने पर फिर लौटना नहीं हो पाता—

मुन्ना : मर क्यों नही गए?

बूढ़ा : मरा नहीं जाता। मर जाने से खोजना नहीं हो पाता—

मुन्ना : खोजने से क्या होता है?

बूढ़ा : मिलता है, मरने से मिलता नहीं है—

मुन्ना : मैंने बहुत दिन खोजा है, तुम्हारे पीछे—

बूढ़ा : मुझे मिला नही, मैं अब खोज रहा हूं—तुम्हारे पीछे—

[मुन्ना रुक जाता है। बूढ़ा पास आता

है। आमने-सामने खड़े होते हैं]

मुन्ना : एक साथ खोजोगे ?

बूढ़ा : बड़ा अंतर है ? संभव होगा ?

मुन्ना : मालूम नहीं। खोजकर देखोगे ?

बूढ़ा : चलो देखें।

[वे एक साथ चलना शुरू करते हैं, कदम से कदम मिलाकर। क्लांत, बिखरे कदम धीरे-धीरे दृढ़ होते हैं, सामंजस्य आता है। चलने में एक तरह का उत्साह है, लय है]

मुन्ना : तुम्हारा नाम क्या है ?

बूढ़ा : मेरा नाम मुन्ना था। तुम्हारा नाम ?

मुन्ना : मेरा नाम मुन्ना है।

बूढ़ा : था। है। था। है।

मुन्ना : है। था। है। था।

[लय बढ़ रही है। आनन्द बढ रहा है। वे मानो चल नहीं रहे हैं, नाच रहे हैं]

बूढ़ा : कैसा लग रहा है ?

मुन्ना : अच्छा लग रहा है।

बूढ़ा : खोजें मिलेगा ?

मुन्ना : पता नहीं। क्या खोज रहे है ?

बूढ़ा : घर का रास्ता।

मुन्ना : (रुककर भय से) वही घर ?

बूढ़ा : ना ! दूसरा घर। सचमुच का घर। सचमुच का सच्चा घर।

मुन्ना : (निराश होकर) एक ही रास्ता है, एक ही रास्ता, एक ही रास्ता—

बूढ़ा : (हठात्) चुप।

मुन्ना : क्या ?

बूढ़ा : लगता है, आ रहा है।

[बाहर दूर से गाने का स्वर सुनाई पड़ता है]

मुन्ना : कौन आ रहा है ?

बूढ़ा : जुलूस।

मुन्ना : कैसा जुलूस ?

बूढ़ा : जुलूस। रास्ता दिखलाने वाला जुलूस। घर का रास्ता दिखलाने वाला जुलूस।

मुन्ना : मैंने बहुत से जुलूस देखे हैं। कोई रास्ता नहीं दिखाता। सब एक ही रास्ते हैं। रास्ता एक ही होता है।

बूढ़ा : चुप। उधर सुनो।

[गाना और जोर से, अधिक निकट से सुनाई पड़ता है]

वह आ रहा है।

मुन्ना : (दबी हुई उत्तेजना के स्वर में) सच कह रहे हो ? सचमच का जुलूस ?

बूढ़ा : लग रहा है, सचमच का जुलूस है।

मुन्ना : किसका जुलूस है?

बूढ़ा : लगता है—आदमियों का है।

[कोरस जुलूस बनकर आता है। गाना गाते हुए। भविष्य का गाना गाते हुए। बूढ़ा और मुन्ना जुलूस के साथ हो लेते है। गाने के सुर में सुर मिलाते है। दर्शकों को भी गाने में योग देने के लिए इशारे से बुलाते है। जो योग देते है, उन्हें अपने साथ लेकर वे चल देते है]

गाना

अंत शीघ्र ही होगा देखो तिमिर घोर अंधियारा,
आज नही तो कल आएगा सुखद विहान हमारा।
छिपा गर्भ में धरती के भंडार विपुल निधियों का,
आज नहीं तो कल होगा ही सब सुख-साज हमारा।

(समाप्त)

□□